# पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

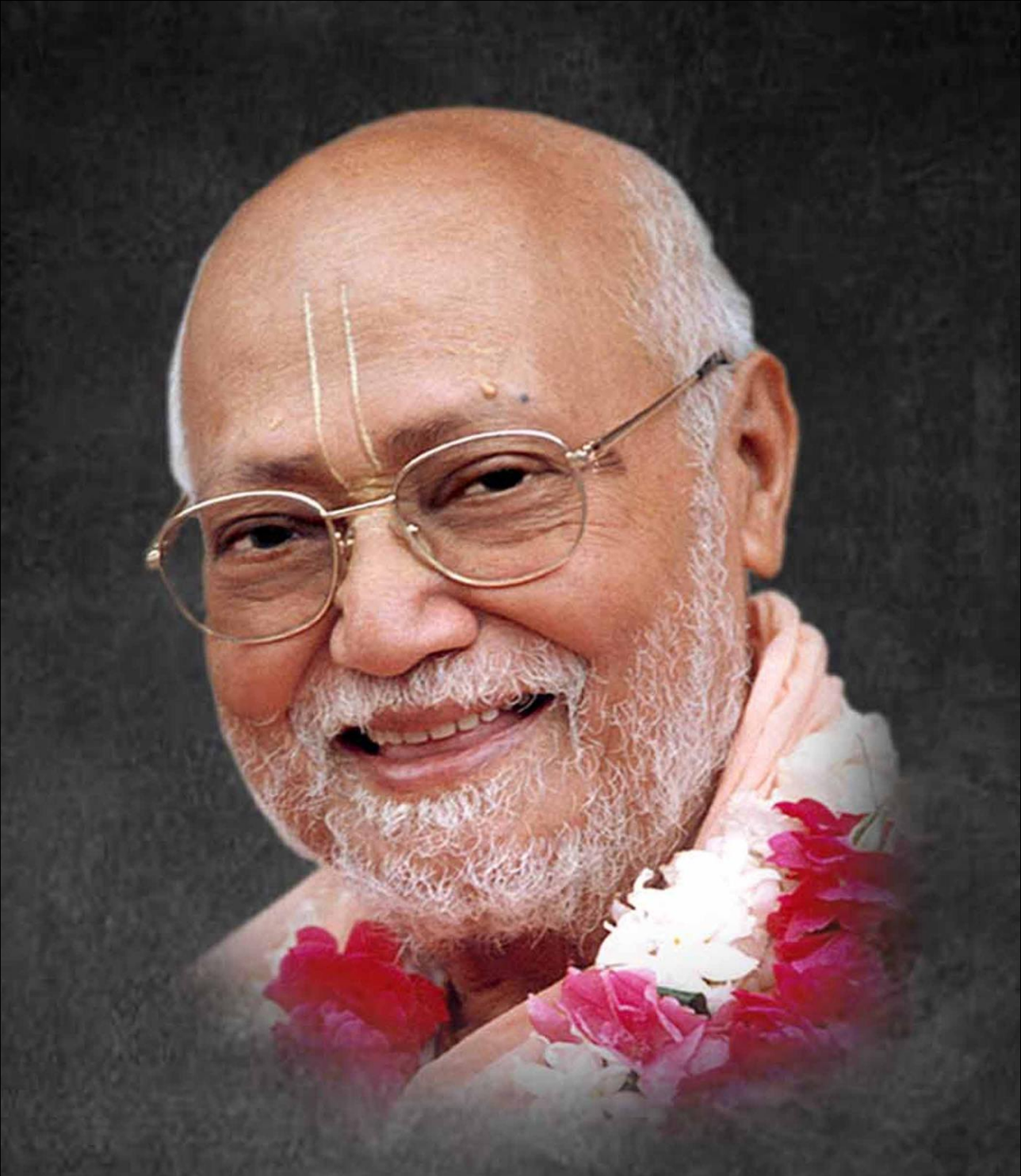

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

# तृतीय खण्ड

## भाग – 17

## श्रीव्रजमण्डल परिक्रमा

श्रीलगुरुदेव

श्रील गुरुदेव जी की अध्यक्षता में सन् 1978 में 84 कोस श्रीव्रजमण्डल परिक्रमा का विराट आयोजन हुआ जो कि 13 अक्तूबर शुक्रवार से 13 नवम्बर सोमवार तक चली। कोलकाता से 11 अक्तूबर बुधवार प्रातः 9 बजे तूफान एक्सप्रेस से श्रील गुरुदेव जी और परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज जी First Class तथा 80 मठवासी और गृहस्थ भक्त Second Class में यात्रा करते हुये, अगले दिन दोपहर

3 बजे मथुरा रेलवे स्टेशन पर पहुँचे । उनके पदार्पण करते ही भक्तों ने उनका विपुलभाव से स्वागत-सत्कार किया । देहरादून, दिल्ली, हैदराबाद, आसाम, त्रिपुरा आदि स्थानों से भी बहुत से भक्तों ने योगदान दिया। फिर अगले दिन पंजाब से भी श्रील गुरुदेव जी के आश्रित भक्तों के आने से यात्रियों की संख्या चार सौ से भी अधिक हो गई । श्रीव्रजमण्डल में- मथुरा (भिवानी, धर्मशाला), गोवर्धन (मैंना धर्मशाला), काम्यवन (विमलाकुण्ड) बरसाना (धातरिया धर्मशाला), नन्दगाँव (पावन -सरोवर के कालेज

में), कोसी (लाला गयालाल जी अग्रवाल स्मृतिभवन), गोकुल महावन (श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ) तथा श्रीवृन्दावनधाम (श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ) - इन आठ शिविरों में भक्तों ने अवस्थान किया। परिक्रमा के समय श्रीउजव्रत अथवा श्रीदामोदरव्रत की नियमसेवा का भी यथारीति से पालन हुआ। श्रील गुरुदेव जी के गुरु- भाइयों में परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज जी के अलावा श्रीमद् भक्ति विकास हृषीकेश महाराज, पूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विलास भारती महाराज और

पूज्यपाद श्री श्रीमद् कृष्णकेशव ब्रह्मचारी प्रभु ने श्रीव्रज परिक्रमा में साथ रहकर हरिकथामृत परिवेशन द्वारा भक्तों का उत्साह वर्द्धन किया। श्रील गुरुदेव जी के द्वारा अस्वस्थ लीला का अभिनय करने के कारण उनके दर्शन और उनके मुखारविन्द से निकलने वाली ओजस्वी हरिकथा को में सुनने से वन्चित होना पड़ा जिससे परिक्रमा के समय भक्तों के हृदय पहले जैसे उल्लास की अनुभूति न हुई । कलकत्ता से मठ के विशेष शुभानुध्यायी डाक्टर श्रीहलधर दास गुरुदेव जी की चिकित्सा सेवा में विशेष प्रयास

करके धन्यवाद के पात्र हुये थे । श्रील गुरुदेव जी जब मथुरा में परिक्रमा कर रहे थे व जब वे भक्तों के साथ श्री श्वेतवराहमन्दिर में चढ़े तो उन्होंने काफी अस्वस्थता अनुभव की परन्तु डाक्टर बाबू के प्रयत्न से कुछ स्वस्थ हो गये । सम्पूर्ण विश्राम लेने का डाक्टर द्वारा निर्देश होने के कारण वे वृन्दावन मठ में बीच-बीच में आकर विश्राम लेते थे। किन्तु हर समय वे इस विषय में खोज-खबर लेते रहते कि परिक्रमा का परिचालन कैसे हो रहा है। वे गोवर्धन, राधाकुण्ड आदि विशेष-विशेष दर्शनीय स्थानों पर

कार के द्वारा आकर भक्तों को दर्शन देते और उनका उत्साह बढ़ाते रहते थे।

11 नवम्बर शनिवार श्रीउत्थान एकादशी तिथि के दिन श्रील गुरुदेव जी की शुभाविर्भाव तिथिपूजा और श्रीव्यासपूजा श्रीवृन्दावनधाम स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ में अनुष्ठित हुई। श्रील गुरुदेव जी ने यमुना स्नान और विग्रह पूजा के बाद वस्त्रार्पण द्वारा अपने गुरु-भाइयों की पूजा की। अपने आश्रित शिष्यों की प्रार्थना से श्रील गुरुदेव जी सुसज्जित आसन पर विराजित

हुये और षोडशोपचार से उनकी सम्यक् पूजा और आरती के बाद भक्तों ने क्रमानुसार उनको पुष्पांजलि प्रदान की। उस समय भक्तजन समझ नहीं पाये कि गुरुदेव जी की शुभाविर्भाव तिथि पर उनकी पूजा तथा साक्षात् रूप से श्रीगुरुपादपद्म में पुनः पुष्पांजलि प्रदान, करने का सौभाग्य उनको और प्राप्त नहीं होगा। श्रील गुरुदेव ने ऐसा जान लिया था कि वे अन्तर्धान करेंगे, जिस कारण उन्होंने अपने गुरु भाइयों और वैष्णवों की सेवा में अभूतपूर्व उत्साह दिखाया। श्रील गुरुदेव जी के गुरु भाई यह अनुभव

कर आश्चर्यचकित से हो गये थे कि उस दिन गुरुजी ने स्वयं अपने हाथों से व्रत के अनुकूल फलाहार-प्रसाद साधुओं, व्रजवासियों और भक्तों को बाँटा। अगले दिन के महोत्सव में सैकड़ों नर-नारियों ने महाप्रसाद का सेवन किया।

श्रीलगुरुदेव